

साकेत खां सुकुमार (१०२)

श्री मीरपुर मंगलाचार री साईं प्रघट भयो जग में।
हर हंथि थी हुबकार री साईं प्रघट भयो जग में॥

स्वामी आत्माराम संत सुजान
श्री राम कथा जो करनि नितु गान
फल दिनुनि करतार री—साईं॥

भागनि भरी अमां सुखनि जी देवी
बालकु पायो सन्तनि सेवी
दिलि जो दाइमु दातार री—साईं॥

साईं मिठे जी जन्म वाधाई
देवनि खुशि थी वर्षा वर्षाई
जग में जै जै कार री—साईं॥

गुरू अ अमड़ि जी गोद भरी आ
बाल विनोद दिसी दिलिड़ी ठरी आ
आयो अंडण अवतार री—साईं॥

रूप उज्यारो सूंह सोभारो
श्री पार्थिवि चंद्र जो परम दुलारो
भरियाऊं भक्ति भण्डार री—साईं॥
कथा कीर्तन जी मौज मचाई

नाम जे धुनि जी रास रचाई
सत्संग जो सरदार री—साई॥

बृज भूमि अ में घरिड़ो कयाऊं
संत सजणनि खे सुखड़ा दिनाऊं
दिठाऊं नित्य विहार री—साई॥

मालिकु मिठिड़ो महिर जो परिवर
बाझारो बापू दानी दिलबर
गरीबनि जो ग़मटार री—साई॥

कुरिब क्यास जी खाणि मनोहर
सदां जिए साई सत्संग शौहर
राघव रस रिझवार री—साई॥

सरल सनेही सदां सुखकारी
शरणि पयनि जो सत् हितकारी
श्री मैगसि चंद्र मनठार री—साई॥